सिंचाई

सतावर की फसल के लिये अधिक सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। शुरुआत में सप्ताह में एक बार तथा पौध बड़ी होने पर माह में एक बार हल्की सिंचाई आवश्यक है। अच्छी पैदावार के लिये पौधों को समय-समय पर माह में एक बार निदाई-गुड़ाई करते रहना चाहिये।

जड़ों का विदोहन

जड़ों को 14 से 18 माह पश्चात् जब पौधा पीला पड़ने लगे तब इसकी जड़ों की खुदाई कर लेनी चाहिये। खोदी गई कंदिल जड़ों को चीरा लगाकर ऊपरी छिल्का उतार कर, अच्छी तरह साफ कर, हल्की धूप में सुखाना चाहिये तथा नमी व आर्द्रता से बचाना चाहिये।

बीजों की प्राप्ति

दिसम्बर- जनवरी माह में पूर्ण पके बीज एकत्र कर सुखा लिये जाते हैं तथा एकत्र कर आगामी फसल के लिये भण्डारण करते हैं।

उपज प्राप्ति एवं आर्थिकी

उपज प्रति हेक्ट.	-	90 क्विंटल (सूखी जड़)
विक्रय मूल्य	-	रु. 10/कि.
लागत	-	रु. 25,000/हेक्टे.
आय	-	रु. 90,000/हेक्टे.
लाभ	-	रु. 65,000/हेक्टे.

•••

एस.एफ.आर.आई. प्रचार पत्रिका - 21

सतावर

(ऐस्पेरेगस रेसीमोसस)

जैव विविधता एवं
औषधी पौध शाला

म.प्र. राज्य वन अनुसंधान
संस्थान, जबलपुर

2001

सतावर
(ऐस्पेरेगस रेसीमासस)

सतावर 'लिलिएसी' कुल का आरोही बहुवर्षीय पौधा है, जिसका उल्लेख प्राचीन ग्रंथों में सतावरी के नाम से मिलता है। बाग-बगीचों में इसे सजावटी पौधों की तरह उगाया जाता है । मूलतः यह एशिया, आफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया में पाया जाता है । भारत में यह 400 अक्षांश ऊँचाई से 1200 मी. ऊँचाई तक पाया जाता है। मध्यप्रदेश में यह साल, सागौन एवं मिश्रित वनों में ''नारबोध'' नाम से प्रचलित है।

आकारिकी

इसकी लता 3-10 फुट ऊँची होती है। यह बहुवर्षीय, कांटेदार, आरोही सहारा लेकर बढ़ती है । शाखायें पतली, पत्तियाँ सुई के समान बारीक हरे रंग की लंबी 1.3 से 2.5 से.मी. तक होती हैं। शाखाओं पर लंबे टेढ़े कांटे होते हैं। सफेद रंग के गुच्छों में फूल लगते हैं । छोटे-छोटे गोल फल पकने पर लाल हो जाते हैं जिनमें काले रंग के बीज होते हैं। इसकी जड़ें कंदवत् लंबी-लंबी गुच्छे में होती है जोकि संख्या में कई होती हैं।

उपयोगी भाग एवं औषधीय गुण

सतावर की कंदिल जड़ें मधुर रसयुक्त तथा कई रसायन युक्त होती हैं जिनका उपयोग आयुर्वेदिक दवाइयों में अधिकता से होता है । जड़ों से प्राप्त सतावरिन रसायन शीतवीर्य, मेधाकारक, जठराग्निवर्धक, पुष्टिदायक, स्निग्ध, नेत्रों के लिये हितकर, शुक्रवर्धक, वात, पित्तरक्त तथा शोध दूर करने वाली होती है। इससे डायबिटीज एवं बलवर्धक टॉनिक, ल्यूकोरिया, अनीमिया, भूख न लगने तथा पाचन सुधारने हेतु टॉनिक, मानसिक तनाव में मुक्ति हेतु दवाइयाँ, दुग्ध बढ़ाने हेतु दवाइयां तथा टॉनिक बनाई जाती हैं।

कृषि - तकनीक

सतावर की खेती उष्ण आर्द्र जलवायु युक्त क्षेत्रों जहां तापमान 10-50 से.ग्रे., वार्षिक वर्षा 250 से.मी. हो तथा मिट्टी बालुई, दोमट मिट्टी अच्छी जल निकासी वाली उपयुक्त होती है । यह कंदिल जड़ों वाली फसल है, जो दोमट भुरभुरी मिट्टी में आसानी से खोदी जा सकती है तथा वृद्धि भी उन्नत होती है । सतावर की खेती पूर्व भूमि की मई-जून माह में 2-3 बार अच्छी तरह जुताई कर लें तथा अगस्त माह में पानी गिरना कम हो तो 15 टन गोबर खाद प्रति हेक्टे. में मिला दें । सामान्यतः बीजों द्वारा मई-माह में पौध रोपणी में तैयार कर लेते हैं। बीजों का अंकुरण प्रतिशत 40 प्रतिशत होता है । प्रति हेक्ट. 2 से 3 कि.ग्रा. बीज, 1 x 10 मी. क्यारी बना कर 3 अनुपात 1 के में गोबर खाद मिलाकर बुआई करते हैं । अगस्त माह में 8-10 सेमी. ऊंचाई के पौधे खेत में प्रत्यारोपण के लिये तैयार हो जाते हैं। खेत में इन्हें 60 x 60 सेमी. अंतराल पर क्यारियों में लगाते हैं।